



THE
MENTORING
PROJECT

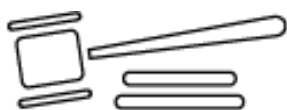
आत्मिक युद्धः कानूनी लड़ाई में परमेश्वर की बुद्धि कैसे पाएँ



AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI

EDITOR: DR. LARRY OATS

आत्मिक युद्ध: कानूनी लड़ाई में परमेश्वर की बुद्धि कैसे पाएँ



लेखक: DR. RICHARD PERHAI

(डॉ. रिचर्ड परहार्ई)

सम्पादक: DR. LARRY OATS

(डॉ. लैरी ओट्स)

विषय-वस्तु

परिचय: “सही” होने की कीमत.....	4
आग की जड़.....	7
कचहरी और क्रूस.....	12
मत्ती 18 अध्याय का नियम	16
साँपों के समान बुद्धिमान, कबूतरों के समान भोले	20
संघर्ष के निशान.....	23
निष्कर्ष.....	26



परिचय: “सही” होने की कीमत

कुछ समय पहले मैं डेव नाम के एक व्यक्ति को जानता था। वह एक ऐसा व्यक्ति था, जिसे आप पड़ोसी के तौर पर पसन्द करेंगे—कम से कम, आरम्भ में तो ऐसा ही था। वह स्थिर स्वभाव का था, कड़ी मेहनत करता था, और अपने बगीचे की देखभाल इतने अच्छे से करता था कि मानो यह उसका शौक हो। परन्तु डेव एक ऐसी समस्या में फँस गया, जिसने अन्त में उसका पूरा जीवन ही निगल लिया: वह समस्या भूमि की तीन-फुट की एक पट्टी थी।

इसका आरम्भ एक नयी बाड़ से हुआ। उसके पड़ोसी ने, जो उससे छोटी आयु का था और जिसे भूमि की सीमाओं को लेकर डेव जैसी परवाह नहीं थी, लकड़ी का एक घेरा लगाया, जिसके लिए डेव को निश्चय था कि यह घेरा उसकी सीमा के भीतर 36 इंच तक आ गया है। कॉफी पीते हुए बातचीत करने के बजाय, डेव ने भूमि के सर्वेक्षण वाले नक्शे निकाल लिए। जब पड़ोसी अपनी बात से पीछे नहीं हटा, तो डेव एक कानूनी प्रतिष्ठान के द्वारा अदालत की चिट्ठियाँ ले आया। इसके बाद उसके ऊपर दस वर्षों तक चलने वाला एक ऐसा जुनून सवार हुआ, जिसके कानूनी शुल्क में डेव के पचास लाख रुपये खर्च हो गए।

अन्त में वह कचहरी में खड़ा था और उसने न्यायाधीश को यह कहता सुना कि वह सही था। वह बाड़ हटा दी गई। डेव को अपनी 36 इंच घास वापस मिल गई। परन्तु भूमि के उस छोटे से टुकड़े पर खड़े होकर, वह असल में अपने ही बनाए हुए कब्रिस्तान में खड़ा था। वह मुकदमा तो जीत गया था, परन्तु अपना आनन्द खो चुका था। उसने अपने शहर के लोगों से मिलने वाला आदर भी खो दिया था, जो अब उसे ऐसे व्यक्ति के तौर पर देखते थे, जो अपनी परछाई पर भी मुकदमा कर दे, यदि वह सीमा पार कर जाए। और सबसे महत्वपूर्ण बात, उसने परमेश्वर में शान्ति पाने के बारे में बात करने की अपनी क्षमता खो दी थी। कोई भी ऐसे व्यक्ति से उस उद्धारकर्ता के बारे में नहीं सुनना चाहता था, जिसने घास काटने की मशीन जितनी जगह के लिए दस वर्षों तक लड़ाई लड़ी हो। उसके पास उस भूमि के कागजात तो थे, परन्तु उसकी आत्मा एक सूखी और खाली जगह बन चुकी थी।

न्याय के बारे में बात करते समय हम अक्सर इसी सच्चाई को अनदेखा कर देते हैं। हमें लगता है कि सही होना ही सबसे बड़ा लक्ष्य है, परन्तु हम भूल जाते हैं कि सही होने की कीमत आत्मा के ऊपर बहुत भारी पड़ सकती है। हम एक ऐसी संस्कृति में रहते हैं, जो हमें हर कीमत पर अपनी वस्तुओं की रक्षा करने के लिए कहती है, फिर भी, हम शायद ही कभी अपने चरित्र पर पड़ने वाली कीमत का हिसाब लगाते हैं।

हममें से अधिकांश लोगों में डेव वाली खुजली का कोई न कोई रूप होता है। जब कोई हमारे साथ बुरा करता है, चाहे वह कोई बिगड़ा हुआ व्यापारिक सौदा हो, कानूनी समस्या हो या पड़ोसियों से झगड़ा हो, तो हमारी पहली स्वाभाविक प्रवृत्ति यह नहीं होती कि बाइबल के तरीके से झगड़ा सुलझाएँ या मार्गदर्शन माँगे। बल्कि हम फोन नम्बरों वाली पुस्तक में कोट-पेंट पढ़ने किसी व्यक्ति को ढूँढ़ने लगते हैं। हमने एक तरह का कानूनी जुनून विकसित कर लिया है। हम ऐसा व्यवहार करते हैं कि मानो कानूनी अदालत ही एकमात्र ऐसी जगह है, जहाँ सब बातें सीधी की जा सकती हैं। हमें विश्वास है कि यदि हमारे पक्ष में निर्णय आ जाए, तो दुःख दूर हो जाएगा और हमारी सुरक्षा बहाल हो जाएगी।

परन्तु मुकदमा करने या अदालत में अपनी बात रखने की यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया हमारे हृदयों के बारे में कुछ गहरी बात बताती है। यह दिखाती है कि हमें असल में भरोसा नहीं है कि परमेश्वर हमारे जीवन को नियंत्रित करता है। हम रविवार को परमेश्वर की सब बातों पर अधिकार रखने के बारे में चर्चा करते हैं, परन्तु सोमवार की सुबह, जब कोई अनुबंध टूटता है, जब बातें गलत हो जाती हैं, तो उस समय परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय, हम ऐसा व्यवहार करते हैं कि मानो इस संसार को हमें ही सम्भालना है। हम कानून का सहारा इसलिए लेते हैं, क्योंकि हम डरे हुए होते हैं। हमें डर होता है कि कोई हमारा लाभ उठा लेगा, हमने जो बनाया है, उसे खो देने का डर होता है, और इस बात का डर होता है कि यदि हम स्वयं के लिए नहीं लड़ेंगे, तो कोई दूसरा भी नहीं लड़ेगा।

कानूनी व्यवस्था अक्सर एक दर्पण की तरह काम करती है, यद्यपि यह ऐसा दर्पण नहीं है, जिसमें हमें देखना अच्छा लगता है। यह नियंत्रण की हमारी छिपी हुई आवश्यकताओं को प्रतिबिम्बित करता है। जब हम कोई बात साबित करने के लिए किसी रिश्ते को समाप्त करने या अपने बच्चों की विरासत को खर्च करने को तैयार हो जाते हैं, तो हम एक मूर्ति की पूजा कर रहे होते हैं। हमने स्वयं को सही साबित करने की इच्छा को ही अपना देवता बना लिया है। हमें लगता है कि यदि हम जीत गए, तो हम सुरक्षित रहेंगे। परन्तु कानून आपको सुरक्षा नहीं दे सकता; यह आपको केवल कागज का एक टुकड़ा दे सकता है। यदि आपकी भलाई का एहसास किसी न्यायाधीश के निर्णय से जुड़ा हुआ है, तो आपने अपनी नाव एक बहुत ही कमजोर घाट से बाँध रखी है।

हमें यह मानना होगा कि न्याय की हमारी खोज भी अक्सर हमारे अपने घमण्ड से दूषित होती है। हम कहते हैं कि हम सिद्धान्तों पर खड़े हैं, परन्तु आम तौर पर, हम बस हमारे अपने अहंकार पर खड़े हुए होते हैं। हम चाहते हैं कि लोग हमें विजेता के रूप में देखें। हम चाहते हैं कि सामने वाला व्यक्ति लज्जित हो।

कानूनी तौर पर सही होने की जल्दबाजी में, हम बाइबल में बताई गई दया और विनम्रता की उन आवश्यकताओं को अनदेखा करके आगे निकल जाते हैं, जिनकी प्रभु हमसे असल में अपेक्षा करता है।

यह मार्गदर्शिका आपको कानूनी सलाह देने या नियमों से बचने का कोई तरीका ढूँढ़ने में आपकी सहायता करने के लिए नहीं है। ऐसे बहुत से लोग हैं, जो आपको अपनी बात मनवाने का तरीका बताने के लिए आपसे हर घण्टे के हिसाब से पैसा लेंगे। इसके बजाय, यह मार्गदर्शिका इस बारे में है कि एक ऐसे संसार में कैसे जीवन बिताया जाए, जो मौलिक रूप से बिखरा हुआ है, और उस बिखराव को अपने हृदय में न आने दिया जाए। यह मार्गदर्शिका इस बारे में है कि झगड़ों, अनुबंधों और टकराव को उस तरीके से कैसे सम्भाला जाए, जिससे आपका विश्वास बना रहे, जिससे आपका हृदय सही जगह पर रहे, और जिससे शान्ति बनी रहे—जितना कर पाने में आप सक्षम हों।

हम इस मुश्किल सच्चाई को देखने जा रहे हैं कि विश्वास रखने वाला व्यक्ति होने का क्या अर्थ है, जब कोई उस वस्तु को लेने का प्रयास कर रहा हो, जो आपके विचार से आपकी है। हम यह भी पूछेंगे कि हम ऐसी मानवीय व्यवस्था पर इतनी जल्दी भरोसा क्यों कर लेते हैं, जो अक्सर हमारी ही तरह उलझन में होती है। स्वामित्व पाने की जिद में पड़े बिना, जो कुछ भी हमें मिला है, हम उसके जिम्मेदार प्रबन्धक बनने का तरीका खोजना चाहते हैं।

इसका लक्ष्य यह है कि हम हर समय बचाव करने वाला जीवन छोड़कर, विश्वासयोग्यता के साथ सेवा करने वाला जीवन अपनाएँ। हो सकता है कि आपको अभी भी कागजों पर हस्ताक्षर करने पड़ें या वकीलों से बात करनी पड़े, परन्तु इसकी अपेक्षा और लक्ष्य यही है कि आप यह काम ऐसे मनुष्य के तौर पर करें, जिसे पता है कि उसकी असली विरासत पहले से ही सुरक्षित है। जब आपको पता हो कि पूरा संसार आपके पिता का है, तो आपको भूमि के एक छोटे से टुकड़े के लिए किसी अनाथ की तरह लड़ने की आवश्यकता नहीं है। आप ऐसे मनुष्य बन सकते हैं, जो तीन-फुट की भूमि जीतने के बजाय शान्ति को चुनता है।

1

आग की जड़

मैंने पहले भी अपनी छाती में वैसी ही बेचैनी महसूस की है। सच कहूँ तो, मैंने की है। मुझे कुछ वर्ष पहले का एक समय याद है, जब मुझे लगा कि कोई ऐसा व्यक्ति मुझे कोने में धकेल रहा है, जिसे मैं अपना मित्र समझता था। वह बहुत अधिक पैसों का मामला नहीं था, परन्तु मुझे उस बात के सिद्धान्तों की चिन्ता थी। मैं रात भर छत को घूरता रहता था और अपने दिमाग में कानूनी बहस के हर पहलू पर सोचता रहता था। वह अनुबंध मेरे बिस्तर के पास रखी जाने वाली छोटी मेज पर रखा होता था, और जब भी मैं उसे देखता, तो मुझ में एक तेज और बेचैन करने वाली गर्माहट उठते हुए महसूस होती थी। अपने सही होने का मुझे इतना दृढ़ निश्चय था कि मैं अपने मन की उस धीमी आवाज को भी नहीं सुन पा रहा था, जो पूछ रही थी कि यह आत्मिक युद्ध असल में मेरी आत्मा पर क्या असर डाल रहा है।

आप और मैं ढाल की तरह उस गुस्से को थाम कर रख सकते हैं, है न? इससे हमें एक पल के लिए सुरक्षित महसूस होता है। हमें विश्वास होता है कि यदि हम जोर लगाकर अपना हक माँगे, तो हम अन्त में फिर से साँस ले पाने में सक्षम होंगे। परन्तु तभी मुझे यह बात आखिरकार समझ में आई। कानूनी लड़ाई शायद ही कभी केवल तथ्यों या बैंक खाते के बारे में होती है। यह इस बारे में होती है कि आपके हृदय के तहखाने में क्या चल रहा है। यह उन गहरी और शान्त जगहों के बारे में होती है, जहाँ हम तय करते हैं कि हम असल में किस पर भरोसा करते हैं कि वह हमारी देखभाल करेगा। परन्तु जब आप कानूनी लड़ाई की आग को जलने देते हैं, तो इससे न केवल उस व्यक्ति को चोट पहुँचती है, जिससे आप लड़ रहे हैं; बल्कि इससे आपके अपने फेफड़े भी धुएँ से भर जाते हैं।

“मैं इसका हकदार हूँ” वाला जाल

कलीसिया लम्बे समय से इस तरह के टकराव से जूझ रही है। यह कोई नयी समस्या नहीं है। कलीसिया के आरम्भिक दिनों में, याकूब ने उन लोगों को पत्नी लिखी, जो विशेष रूप से एक-दूसरे का गला पकड़े हुए थे। उसने एक ऐसा प्रश्न पूछा, जो आज भी आपको सोचने पर विवश कर देता है: तुम में लड़ाइयाँ और झगड़े कहाँ से आ गए? वह इसके लिए कानूनी व्यवस्था को या बेहतर अनुबंध की कमी को जिम्मेदार नहीं

ठहराता। वह कहता है कि ये हमारे अपने सुख—विलासों से उत्पन्न होते हैं, जो हमारे अंगों में लड़ते—भिड़ते हैं। हम कुछ ऐसा चाहते हैं, जो हमारे पास नहीं है, इसलिए हम लड़ते-झगड़ते हैं। असल में, वह कहता है कि हम जीतने की इतनी जबरदस्त इच्छा रखते हैं कि हम “हत्या” तक कर देते हैं। उसके कहने का अर्थ सचमुच किसी की हत्या करना नहीं है, बल्कि यह उस तरह की हत्या है, जिसके बारे में यीशु ने पहाड़ी उपदेश में बात की थी। यह ऐसी दशा है, जिसमें आप किसी दूसरे व्यक्ति से इतने नाराज होते हैं कि बाइबल के अनुसार गुस्से को सम्भालने के तरीके को अनदेखा करते हुए, आप उसका अपमान करने या उस पर मुकदमा करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। ऐसा गुस्सा आम तौर पर हमारी इच्छाओं और अपेक्षाओं के पूरा न होने से उत्पन्न होता है।

परन्तु “मैं इसका हकदार हूँ” वाली सोच—जो बाइबल में घमण्ड का एक आम उदाहरण है—एक ऐसा जाल है, जिसमें फँसना बहुत ही आसान है। हम अपनी कड़ी मेहनत को, अपने समय को और अपने निवेश को देखते हैं और उन्हें अपना अधिकार समझने लगते हैं। हमें लगता है कि हम किसी विशेष परिणाम के हकदार इसलिए हैं, क्योंकि हमने नियमों का पालन किया है। परन्तु यदि हम उस विश्वास के बारे में ईमानदार हैं, जिसका हमने दावा किया है, तो हमें यह मानना होगा कि असल में हमारे पास अपना कुछ भी नहीं है। हमारे पास जो कुछ भी है—यहाँ तक कि हमारे फेफड़ों की साँस भी—वह सब उस प्रभु की ओर से मिले कर्ज पर एक आशीष है।

अधिकार और आशीष में बहुत बड़ा अन्तर होता है। अधिकार वह बात है, जिसे आप मुट्ठी भीचकर माँग सकते हैं। आशीष वह बात है, जिसे आप खुली हथेली से स्वीकार करते हैं। जब हम आशीषों को अधिकार समझने लगते हैं, तो हम ऐसा व्यवहार करने लगते हैं, जैसे सूरज को हमने ही केवल इसलिए उगाया हो, क्योंकि हम ज्योति में खड़े होना चाहते हैं। हम माँग करने वाले हो जाते हैं, हम बेचैन हो जाते हैं, और हम तीन-फुट की भूमि के लिए भी लड़ने को इसलिए तैयार हो जाते हैं, क्योंकि हम भूल जाते हैं कि वह भूमि तो आरम्भ से ही कभी हमारी नहीं थी। अन्त में आप एक ऐसे राज्य के लिए लड़ रहे होते हैं, जिसे कभी आपका अनन्तकाल का घर नहीं बनना था।

निष्पक्षता की मूर्ति

यह संसार निष्पक्षता के बारे में बहुत अधिक बातें करता है, और हम अक्सर अपनी बातों को सही साबित करने के लिए न्याय के बारे में बाइबल के वचन ढूँढ़ते हैं। हमें बचपन से ही सिखाया जाता है कि न्याय अंधा होना चाहिए और न्याय का तराजू हमेशा सन्तुलित रहना चाहिए। यदि कोई आपसे कुछ ले लेता है, तो आपको उसे वापस लेने में सक्षम होना चाहिए। परन्तु जब आप सुसमाचार के नजरिए से और झगड़ों के बारे में मसीही दृष्टिकोण से निष्पक्षता को देखते हैं, तो यह एक मजाकिया सी बात लगती है। यदि परमेश्वर हमारे साथ पूरी तरह निष्पक्ष होता, तो हममें से कोई भी इस समय पर यहाँ खड़ा नहीं होता। हम

खो गए होते, या हमारे साथ इससे भी बुरा हुआ होता। इसके अलावा, हमारे विश्वास की नींव ही इस संसार के इतिहास की सबसे अधिक अन्यायपूर्ण घटना पर टिकी है। वह क्रूस सबसे बड़ा अन्याय था। अब तक जीवित रहे मनुष्यों में से उस एकमात्र सिद्ध मनुष्य ने उन लोगों का दण्ड अपने ऊपर ले लिया, जिन्होंने असल में गलत काम किया था।

जब हम बदला लेने की धुन में लग जाते हैं, तो अनिवार्य रूप से हम यही कह रहे होते हैं कि हमें परमेश्वर की नहीं, बल्कि अपनी शर्तों पर न्याय चाहिए। हम निष्पक्षता को ही वह मूर्ति बना लेते हैं, जिसकी हम पूजा करते हैं। हमें लगता है कि यदि हम स्वयं हिसाब बराबर कर लें, तो अन्त में हम प्रसन्न हो जाएंगे। परन्तु ऐसा कभी नहीं होता, है न? आप जितना अधिक बदला लेने का प्रयास करते हैं, उतना ही अधिक आपको नाराजगी और कड़वाहट से जूझना पड़ता है, और आप ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं, जिसे आप स्वयं भी नहीं पहचान पाते। आप कठोर और उदासीन हो जाते हैं। आप हर व्यक्ति को पड़ोसी के बजाय सम्भावित शत्रु की तरह देखने लगते हैं।

आप उस दृष्टान्त वाले दास की तरह बन जाते हैं, जिसका बहुत बड़ा कर्जा क्षमा कर दिया गया था, और फिर वह बाहर जाकर कुछ पैसों के लिए किसी दूसरे का गला दबाने लगा। यह धीरे-धीरे और खामोशी से एक फरीसी बनने का एक तरीका है—अर्थात् ऐसा व्यक्ति जो तकनीकी रूप से तो सही है, परन्तु जिसमें अनुग्रह बिलकुल भी नहीं है। आप बहस तो जीत सकते हैं, परन्तु हृदय को हार जाते हैं। और सच कहूँ तो, ऐसे मनुष्य से अधिक दुःखी कोई नहीं हो सकता, जो हमेशा यह हिसाब लगाता रहता है कि संसार पर उसका कितना कर्जा बकाया है। इससे जीवन बहुत अधिक अकेला और कमजोर हो जाता है।

प्रतिष्ठा का भूत

उसके बाद यह भूत आता है। मैं इसे भूत इसलिए कहता हूँ, क्योंकि यह इस बात का डर है कि लोग क्या सोचेंगे—जो कि बुरा मनुष्य समझे जाने का डर है। मैंने ऐसे लोगों को देखा है, जिन्होंने अदालत जाकर पचास लाख रुपये खर्च कर दिए, इसलिए नहीं कि उन्हें पैसों की आवश्यकता थी, बल्कि इसलिए क्योंकि वे इस विचार को सहन नहीं कर सकते थे कि कोई उनके नाम को बदनाम करे। उन्हें लगा कि उन्हें गलतफहमियों को दूर करके अपने आपको निर्दोष साबित करना है और उन्होंने प्रतिष्ठा के बारे में बाइबल की बुनियादी शिक्षाओं को अनदेखा कर दिया। वे सो भी नहीं पाते थे, क्योंकि उन्हें यह विचार परेशान करता रहता था कि कोई न कोई, कहीं न कहीं, उन्हें गलत समझ रहा है।

परन्तु कुछ देर के लिए यीशु के बारे में सोचिए। उसके समय के सबसे बड़े कानूनी अधिकारियों ने उसके बारे में झूठ बोला था। उसे पियक्कड़, राज-द्रोही और परमेश्वर की निन्दा करने वाला कहा गया। और बाइबल बताती है कि वह आम तौर पर चुप रहता था। निश्चित रूप से ऐसे अवसर भी आए, जब उसने

उन्हें यह कहकर चुनौती दी, “तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है?” परन्तु उसने अपनी छवि बचाने के लिए कोई पलकार सम्मेलन या कोई मुकदमा नहीं किया। उसे हर अफवाह का पीछा करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। उसे भरोसा था कि पिता सच जानता है, और उसके लिए इतना ही पर्याप्त था, और उसने हमें दिखाया कि बाइबल के तरीके से धोखे का सामना कैसे किया जाए। वह जानता था कि उसका चरित्र उसकी प्रतिष्ठा से अधिक महत्वपूर्ण है।

जब हम अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए जोर-शोर से लड़ते हैं, तो हम आम तौर पर अपने घमण्ड को ही बढ़ावा दे रहे होते हैं। हम विजेता के तौर पर दिखना चाहते हैं। हम सबसे ऊपर रहना चाहते हैं। परन्तु आपकी असली पहचान किसी स्थानीय कचहरी के अभिलेख में या आपके समुदाय की गपशप में नहीं होती। आपकी पहचान मसीह के साथ छिपी हुई है। यदि परमेश्वर सच जानता है, तो आपको बाकी सबको समझाने का प्रयास में अपना जीवन बर्बाद करने की आवश्यकता नहीं है। आप गलत समझे जाने को कुछ समय के लिए सहन कर सकते हैं। आप किसी दूसरे को अन्तिम बात कहने देना सहन कर सकते हैं और शान्ति से जीवन जीने का तरीका सीख सकते हैं। यह एक मजबूत तरह की स्वतंत्रता है, जो तभी मिलती है, जब आप स्वयं का उद्धारकर्ता बनने का प्रयास करना छोड़ देते हैं।

असली कीमत

मैंने लोगों को अपना अदालती मुकदमा जीतते और पैसा लेकर जाते हुए देखा है, परन्तु उनकी आत्मा रेगिस्तान जैसी सूखी हो गई थी। उन्हें तीन-फुट की भूमि तो मिल गई, परन्तु वे अपने पड़ोसी से प्रेम करने की योग्यता खो बैठे और उन लोगों को क्षमा करने का तरीका भूल गए, जिन्होंने उन उन्हें दुःख पहुँचाया था। वे सन्देह करने वाले और गुस्सा करने वाले बन गए थे, और नाराजगी पर काबू पाने से बहुत अधिक दूर हो गए थे। वे लड़ाई तो जीत गए थे, परन्तु उन्होंने वह बात खो दी थी, जो उन्हें मसीह में उनकी पहचान देती थी। कई बार ऐसा हुआ, जब यीशु दूसरों की बात से सहमत नहीं था और उसने कोई दूसरा तरीका अपनाया। उदाहरण के लिए, उसने मन्दिर के बाहर अन्यजातियों के आँगन में दुकान लगाने वाले व्यापारियों को भगाने के लिए कोड़ा बनाने में समय लगाया। परन्तु उसने ऐसा उन लोगों की रक्षा के लिए किया, जिन्हें परमेश्वर तक पहुँचने से रोका जा रहा था। ऐसा करने पर कुछ समय के लिए लोगों के बीच उसकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचा था।

इस आग की जड़ दूसरे व्यक्ति के कामों में नहीं मिलती; यह कठिन समय में परमेश्वर पर भरोसा करने का तरीका सीखने से इन्कार करने और यह विश्वास करने में मिलती है कि कोई भी कानूनी प्रतिष्ठान हमारे जीवन की जितनी अच्छी रीति से रक्षा कर सकता है, उससे कहीं बेहतर रक्षा परमेश्वर करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि, जब हम बाइबल में मुकदमों के बारे में पढ़ते हैं, तो नया नियम सिखाता है कि परमेश्वर के सेवक के तौर पर भले (बदला लेने वाले) उद्देश्य से सरकार तलवार रखती है। इसलिए, बाइबल किसी

भी परिस्थिति में अदालत जाने से मना नहीं करती। परन्तु जब आपका उद्देश्य बदला लेना, बदला चुकाना या अपना हक पाना होता है, तो यह निर्णय लेने के बाइबल के सभी सिद्धान्तों का उल्लंघन होता है। अब, यदि आप किसी को बुराई के चंगुल से छुड़ाने का प्रयास कर रहे हैं या ऐसी बात को बचाने का प्रयास कर रहे हैं, जिसके बारे में आपको विश्वास है कि परमेश्वर ने उसे अपनी महिमा के लिए ठहराया है, तो शायद इसका सही न्याय कचहरी में ही मिले। परन्तु सामान्य तौर पर, इसका सिद्धान्त बहुत अधिक स्पष्ट है। अदालत मत जाओ, क्योंकि इसका न्याय कलीसिया करेगी। यदि आपका कोई मामला है, तो उसे कलीसिया में लाओ। उसे प्राचीनों के सामने लाओ।

परन्तु हमारा पहला झुकाव क्या होता है? हम इसलिए लड़ते हैं, क्योंकि हम डरते हैं। हमें डर लगता है कि यदि हम अपने लिए खड़े नहीं हुए, तो कोई दूसरा भी नहीं होगा। परन्तु सुसमाचार हमें बताता है कि हमारा एक पिता है, जिसके पास हज़ारों पहाड़ियों के मवेशी हैं। हम अनाथ नहीं हैं, जिन्हें टुकड़ों के लिए लड़ना पड़े। हम ऐसे वारिस हैं, जिनसे पूरे राज्य का वादा पहले ही किया जा चुका है।

जब आपको यह एहसास होता है, तो “मैं इसका हकदार हूँ” वाले जाल की शक्ति समाप्त हो जाती है। निष्पक्षता की मूर्ति टूटने लगती है। प्रतिष्ठा का भूत और भी अधिक डरावना लगना बन्द हो जाता है। और अन्त में, आप मुट्ठी भींचकर रखने के बजाय खुले हाथों से जीवन बिताना आरम्भ कर सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि आप कभी किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर न करें या लोगों को आप पर चढ़कर आगे निकल जाने दें। परन्तु इसका अर्थ यह है कि आपकी शान्ति इस बात से जुड़ी हुई नहीं है कि आप जीतते हैं या नहीं। आप मन की शान्ति बनाए रखना और एक खराब व्यवस्था में भी उस खराबी को अपने हृदय में आने दिए बिना आगे बढ़ना सीख सकते हैं। सच्चा विश्वास शायद ही कभी व्यवस्थित होता है, परन्तु बातों को जाने देने की प्रक्रिया में अनुग्रह मिलता है।

2

कचहरी और क्रूस

जब आप कचहरी के गलियारे में खड़े होते हैं, तो पेट में होने वाली उस विशेष और ठण्डी बेचैनी को मैं जानता हूँ। वहाँ की हवा को साफ किया गया होता है, फर्श दर्पण की तरह चमकाया गया होता है, और आपके आसपास कोट-पेंट पहने ऐसे लोग होते हैं, जो सामान्य रूप से आपका नाम भी नहीं जानते और सच कहूँ तो उन्हें आपकी कहानी की कोई परवाह ही नहीं होती। उनके लिए, आप बस एक मुकदमे की संख्या हैं। उस पल में, अदालत ही एकमात्र ऐसा बचा हुआ “बड़ा भाई” लगता है, जो बातों को ठीक कर सकता है। परन्तु यदि हम उन बातों पर ईमानदार बनें, जिसे बाइबल असल में बताती है, तो हमें नये नियम के उस हिस्से को देखना होगा, जिसे हममें से अधिकांश लोग छोड़ देना पसन्द करते हैं। मैं उस पल की बात कर रहा हूँ, जब बाहरी संसार के काम करने का तरीका और राज्य के काम करने का तरीका आमने-सामने टकराते हैं।

कुरिन्थियों का भ्रष्ट दर्पण

जब पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को अपनी पहली पत्नी लिखी, तो वह ऐसे लोगों के समूह का सामना कर रहा था, जो बिल्कुल हमारी तरह थे। वे महत्वाकांक्षी और सफल लोग थे, और अपने अधिकारों को लेकर बहुत अधिक जुनूनी थे। वे ऐसी संस्कृति में रहते थे, जहाँ मुकदमेबाजी पसन्द की जाती थी। इस प्राचीन कुरिन्थ में, अदालतें मूल रूप से सामाजिक चालें चलने की रंगशाला थी। यदि आप किसी प्रतिद्वंद्वी के विरुद्ध मुकदमा जीत जाते, तो आपको केवल पैसे ही नहीं मिलते — आपको हैसियत भी मिलती थी। आप संसार को दिखा देते कि आप सबसे ऊपर हैं।

पौलुस 1 कुरिन्थियों 6:1 में उसी दशा में पहुँचता है, और वह पूरी तरह हैरान दिखता है। वह उनसे पूछता है: “*क्या तुम में से किसी को यह हियाव है कि जब दूसरे के साथ झगड़ा हो, तो फैसले के लिये अधर्मियों के पास जाएँ और पवित्र लोगों के पास न जाएँ?*” वह ऐसे लोगों को देख रहा है, जो दावा करते हैं कि एक दिन वे इस संसार का और यहाँ तक कि स्वर्गदूतों का भी न्याय करेंगे (1 कुरिन्थियों 6:2 -3), फिर भी वे

आपस में, अर्थात् भाइयों या साथी विश्वासियों के बीच किसी व्यापारिक सौदे या सम्पत्ति के टुकड़े के झगड़े को सुलझा नहीं पाते।

वह मुकदमा आरम्भ होने से पहले ही इसे “दोष” कहता है। यही वह बात है, जो आम तौर पर सबसे अधिक चुभती है। हमें लगता है कि यदि निर्णय हमारे पक्ष में हो, तो हमने लड़ाई जीत ली। परन्तु पौलुस 1 कुरिन्थियों 6:7 में कहता है कि सचमुच हमारा “बड़ा दोष” तो यह है कि हम किसी भाई के विरुद्ध मुकदमा करते हैं। हमारी गवाही, जो सबसे महत्वपूर्ण बात थी, उसे हमने पहले ही खो दिया है। हमने राज्य के पारिवारिक मामले को और घर की बातों को उन लोगों के सामने उजागर किया है, जो पिता पर विश्वास भी नहीं करते। हमने संसार को यह बताया है कि परमेश्वर का अनुग्रह किसी अनुबंध को लेकर हुए मतभेद को सम्भालने के लिए उतना मजबूत नहीं है।

दुःख देने वाला प्रश्न

फिर पौलुस एक ऐसा प्रश्न पूछता है, जो पेट पर लगे मुक्के की तरह महसूस होता है: “अन्याय क्यों नहीं सहते? अपनी हानि क्यों नहीं सहते?” (1 कुरि. 6:7)।

मैंने इस प्रश्न पर काफी समय तक विचार किया है, और मैं सच-सच कहूँगा कि, मुझे इसका उत्तर अब भी पसन्द नहीं है। हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति यह चिल्लाने की होती है कि यह उचित नहीं है। परन्तु पौलुस यह सुझाव दे रहा है कि सुसमाचार की कीमत पर मुकदमा जीतने के बजाय, धोखा खा लेना एक मसीही के लिए वास्तव में बेहतर परिणाम हो सकता है। वह हमसे यह सोचने के लिए कह रहा है कि हमारा बैंक खाता मसीह की प्रतिष्ठा से कम महत्वपूर्ण है।

यह कोई कमजोर या निष्क्रिय समर्पण नहीं है। यह इस बात पर भरोसा करने का एक मजबूत और कठिन चुनाव है कि परमेश्वर हमसे बेहतर हिसाब-किताब रखने वाला है। जब हम अन्याय सहने से इनकार करते हैं, तो हम मूल रूप से यह कह रहे होते हैं कि हमें विश्वास नहीं है कि परमेश्वर उस कमी को पूरा कर सकता है। हम ऐसे अनाथों की तरह व्यवहार करते हैं, जिन्हें हर छोटे पैसे के लिए इसलिए लड़ना पड़ता है, क्योंकि हमारे पास ऐसा कोई पिता नहीं है, जिसके पास यह सब कुछ हो।

परन्तु क्या होगा, यदि दूसरा व्यक्ति भाई न हो? तब क्या होगा? पहली बात, कुछ मामले ऐसे होते हैं, जिन्हें व्यवस्था के अनुसार कानूनी अधिकारियों के पास ले जाना पड़ता है; तो आपको यह जानने के लिए कानूनी सलाह लेनी चाहिए कि वे क्या हैं। दूसरी बात, इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीहियों को कभी अदालत नहीं जाना चाहिए या हमें उन न्यायाधीशों का आदर नहीं करना चाहिए, जो मसीह को नहीं जानते। परन्तु जब कोई विश्वासी किसी अविश्वासी के साथ विवाद करता है, तो कलीसिया के भीतर का समाधान लागू नहीं होता—वहाँ निर्णय करने के लिए कोई साझा मसीही समुदाय नहीं होता। अन्तर्निहित

सिद्धान्त (उद्देश्य, गवाही, और मसीही ज्ञान के बजाय सांसारिक व्यवस्थाओं पर निर्भरता) तो प्रासंगिक विचार बने ही रहते हैं। अविश्वासियों के साथ व्यवहार करते समय वह चिन्ता कम तीव्र हो सकती है, परन्तु उद्देश्य और गवाही का प्रश्न तब भी लागू होता है।

न्याय की सीमा

अब, मैं यहाँ बहुत सावधानी बरतना चाहता हूँ। पौलुस यह नहीं कह रहा है कि कानून बुरा है या सरकार का अस्तित्व नहीं होना चाहिए। रोमियों 13:4 में, वह हमें बताता है कि सरकार के पास “तलवार” एक कारण से होती है—अर्थात् वह गलत काम करने वाले को दण्ड देने के लिए परमेश्वर की सेवक है। पैसे को लेकर होने वाले मामूली घरेलू झगड़े और असल नुकसान से बचाव की आवश्यकता वाली दशा के बीच बहुत बड़ा अन्तर है।

यदि आप दुर्व्यवहार, अपराध, या ऐसी दशा का सामना कर रहे हैं, जहाँ किसी की शारीरिक सुरक्षा खतरे में है, तो आप भाइयों के बीच की किसी “छोटी-मोटी बात” का सामना नहीं कर रहे हैं। आप उस व्यवस्था के उल्लंघन का सामना कर रहे हैं, जिसे परमेश्वर ने संसार को अव्यवस्था में जाने से बचाने के लिए बनाया था। ऐसे मामलों में, व्यवस्था एक उपहार है। किसी अपराध की सूचना देना या सुरक्षा माँगना आपके घमण्ड की बात नहीं है; यह कमजोर लोगों की देखभाल करने के आदेश की बात है।

समस्या यह है कि हमने अपनी निजी नाराजगी सुलझाने के लिए सरकार की “तलवार” का उपयोग करना आरम्भ कर दिया है। हम इसका उपयोग किसी ऐसे व्यापारिक भागीदार से बदला लेने के लिए करते हैं, जिसने हमें परेशान किया हो, या किसी सौदे से कुछ और पैसा ऐंठने के लिए करते हैं। हमें बड़ी ईमानदारी से स्वयं से यह पूछना होगा: क्या मैं निर्दोष लोगों की रक्षा के लिए कानून का उपयोग कर रहा हूँ, या मैं इसका उपयोग वह पाने के लिए कर रहा हूँ, जिसे मैं अपना हक समझता हूँ? और यही एक महत्वपूर्ण अन्तर है।

अदालत के तौर पर कलीसिया

इन सबमें सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि हमने उन लोगों की बुद्धिमानी पर भरोसा करना छोड़ दिया है, जिन्हें असल में परमेश्वर ने हमारे जीवन में रखा है। पौलुस 1 कुरिन्थियों 6:5 में उन लोगों से पूछता है, “*क्या सचमुच तुम में एक भी बुद्धिमान नहीं मिलता, जो अपने भाइयों का निर्णय कर सके?*” उसका कहना है कि कलीसिया ही वह जगह होनी चाहिए, जहाँ हमें सच्चा न्याय मिले, क्योंकि कलीसिया ही एकमात्र ऐसी जगह है, जो असल में अनुग्रह को समझती है।

परन्तु सच कहूँ तो? हममें से अधिकांश लोग कलीसिया के प्राचीनों के पास नहीं जाना चाहते। हम सरकार के पास भागे चले जाते हैं, क्योंकि उसके पास एक हथौड़ा होता है। सरकार लोगों को काम करने के लिए विवश कर सकती है। सरकार हमसे हमारे घमण्ड के बारे में नहीं पूछती; वह केवल कानूनों को देखती है। हमने कलीसिया के बजाय सरकार पर अधिक भरोसा करना आरम्भ कर दिया है, क्योंकि हम मेल-मिलाप के मुश्किल काम का सामना नहीं करना चाहते। हम चाहते हैं कि कोई न्यायाधीश हमें सही ठहराए, और कोई भाई हमें यह न बताए कि हम घमण्डी हो रहे हैं।

जब हम कलीसिया को छोड़कर कचहरी जाते हैं, तो हम यह मान रहे होते हैं कि हमें यह विश्वास नहीं है कि परमेश्वर की बुद्धि असल जीवन के लिए व्यावहारिक है। हमने अपने बड़े परिवार का अधिकार एक ऐसी सांसारिक व्यवस्था को सौंप दिया है, जो क्रूस की पहली बात को भी नहीं समझती। हम काले चोगे वाले अजनबी पर जितना भरोसा करते हैं, उससे बढ़कर हमें अपने भाइयों पर भरोसा करने का तरीका खोजना होगा। इसका अर्थ उन लोगों की बात सुनने के लिए तैयार रहना है, जो असल में हमारी आत्मा को जानते हैं, भले ही वे हमसे यह कहें कि सबसे अच्छी बात जिसे हम कर सकते हैं, वह पैसों को जाने देना है।

अन्तिम निर्णय

और अन्त में, अपने जीवन को ठीक करने के लिए सरकार के हथौड़े पर भरोसा करना, जीवन जीने का एक भारी तरीका है। यह आपको चिन्ता के घेरे में रखता है। परन्तु क्रूस एक अलग तरह का न्याय देता है। कुलुस्सियों 2:14 में हमें बताया गया है कि मसीह ने हमारे विरुद्ध मौजूद “विधियों का वह लेख” मिटा दिया है। हाँ, जो हमारे विरुद्ध था। यदि वह कर्जा चुका दिया गया है, तो हमें पागलपन के साथ अपना जीवन हमारे उन सभी बकाया कर्जों को वसूलने के प्रयास में नहीं बिताना चाहिए।

आप किसी झगड़े में बिलकुल अलग भाव के साथ जा सकते हैं। आप वह व्यक्ति बन सकते हैं, जो नुकसान उठाने को तैयार हो, यदि इसका अर्थ यह है कि कलीसिया की शान्ति बनी रहे। यह किसी का पायदान बनने के बारे में नहीं है; यह इस सच्चाई को जीने के बारे में है कि आप पहले से ही एक अलग राज्य के नागरिक हैं। और वहाँ की सड़कें सोने की बनी हैं। यह इस बात को समझने के बारे में है कि किसी विवाद में आप जो सबसे बलशाली काम कर सकते हैं, वह मुकदमा जीतना नहीं, बल्कि संसार को यह दिखाना है कि आपका राजा ऐसा है, जो उन सब बातों से कहीं अधिक कीमती है, जिसे वे आपसे कभी छीन सकते हैं।

3

मत्ती 18 अध्याय का नियम

किसी भी दूसरी बात की तुलना में मैंने लगभग गलत समझे गए लिखित सन्देश के कारण से मित्रता और व्यापारिक साझेदारी को अधिक समाप्त होते देखा है। यह बहुत छोटी सी बात—अर्थात् देर से भुगतान से आरम्भ होता है, कोई परियोजना जिसने ठीक से काम नहीं किया, या कोई ऐसी टिप्पणी, जो थोड़ी अधिक तीखी लगी। फोन उठाने या उनके कार्यालय जाने के बजाय, हम स्क्रीन के पीछे बैठे रहते हैं। हम एक सन्देश लिखते हैं और उसे मिटा देते हैं, उसे फिर से लिखते हैं, और अन्त में हृदय की धड़कन तेज होने के साथ भेजने वाला बटन दबा देते हैं। फिर हम प्रतीक्षा करते हैं। हम उन छोटे से लिखाई का संकेत देने वाले गुब्बारों के दिखने की प्रतीक्षा करते हैं। जब तक बातचीत समाप्त होती है, तब तक दोनों पक्षों ने ऐसी बातें समझ ली होती हैं, जो वहाँ थीं ही नहीं, और अगली बात जो आपको पता चलती है, वह यह कि कोई अपने वकील की बात कर रहा है।

कलीसिया में मैंने जितनी भी कानूनी परेशानियाँ देखी हैं, उनमें से अधिकांश से बचा जा सकता था, यदि लोग एक-दूसरे के आमने-सामने बैठकर बात करने की हिम्मत रखते, विशेष करके उस समय जब मसीही संगति को मुश्किल लोगों से निपटने का सामना करना पड़ता है। परन्तु हमने कठिन बातचीत की कला खो दी है। हम अपनी बात कहने के लिए वकील को प्रति घण्टा पचास हजार रुपये देना अधिक पसन्द करते हैं, बजाय इसके कि हम उस व्यक्ति के साथ खुलकर बात करने में बीस मिनट बिताएँ, जिसने हमें ठेस पहुँचाई है। यदि हम कचहरी से बाहर ही रहना चाहते हैं, तो हमें उस नियम को अपनाना होगा, जो असल में हमारे प्रभु ने हमें दिया था।

आमने-सामने बातचीत बनाम स्क्रीन के द्वारा बातचीत

किसी दूसरे मनुष्य की आँखों में देखने में कुछ तो बात है कि इससे झगड़े का तापमान बदल जाता है। जब आप स्क्रीन को देख रहे होते हैं, तो दूसरी ओर वाला व्यक्ति परमेश्वर के स्वरूप में बनाया हुआ कोई पड़ोसी नहीं, बल्कि आपकी प्रसन्नता में एक रुकावट जैसा लगता है। लिखते समय उदासीन, कठोर और अपनी बात पर अड़े रहना आसान होता है। परन्तु जब आप एक ही कमरे में होते हैं, तो आप उनकी आवाज में

हिचकिचाहट सुन सकते हैं और उनके चेहरे पर तनाव देख सकते हैं। इससे आप कई बारीकियों को फिर से समझ पाते हैं, जो हमें मनुष्य बनाती हैं।

मत्ती 18:15 में यीशु कहता है, “यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा।” ध्यान दें कि पहला कदम अपने वकील, या अपने जीवनसाथी, या अपने सबसे अच्छे मित्र को बताना नहीं है। पहला कदम स्वयं उसके पास जाना है। और पुराने समय में, इसका अर्थ शारीरिक रूप से चलकर जाना था। इसका अर्थ आमने-सामने उपस्थित होना था।

जब आप किसी के आमने-सामने बैठते हैं, तो उन्हें “खलनायक” मानने की सोच बनाए रखना बहुत कठिन हो जाता है। आप उन्हें एक ऐसे मनुष्य के तौर पर देखने के लिए विवश हो जाते हैं, जिसके शायद अपने डर और दबाव हैं। बहुत सी बार, आपको पता चलेगा कि आपके साथ हुआ “अन्याय” कोई सोचा-समझा आक्रमण नहीं था; बल्कि वह एक लुटि, एक गलतफहमी या एक बहुत बुरा सप्ताह था। परन्तु यदि आप स्क्रीन के पीछे छिपे रहेंगे, तो आपको यह कभी पता नहीं चलेगा। कठिन बातचीत की कला का अर्थ आमने-सामने होने का हियाव रखना है। इसका अर्थ है कि जितना आप बोलते हैं, उतना ही सुनने के लिए भी तैयार रहें। यदि आप किसी की आँखों में आँखें डालकर यह नहीं बता सकते कि आपको बुरा क्यों लगा, तो शायद आपको उन्हें अदालत ले जाने का भी कोई अधिकार नहीं है।

शान्ति के तीन कदम

यीशु ने हमें केवल अच्छा बनने के लिए नहीं कहा; उसने हमें झगड़ों को सुलझाने की एक विशेष और ठोस प्रक्रिया बताई। हम इसे आम तौर पर मत्ती 18 अध्याय का नियम कहते हैं, परन्तु हममें से अधिकांश लोग इसे एक आज्ञा के बजाय केवल एक सुझाव की तरह लेते हैं।

इसका पहला कदम अकेले में और आमने-सामने बातचीत करना है। यहाँ उद्देश्य बहस “जीतना” नहीं, बल्कि उस भाई को जीतना है। यदि आप उस बैठक में माँगों की सूची लेकर और “मेरी बात मानो, नहीं तो रास्ता नापो” वाले रवैये के साथ जाते हैं, तो आप पहले ही विफल हो चुके हैं। आप शान्ति का प्रस्ताव लेकर जाते हैं। आप यह देखने जाते हैं कि क्या बाकी संसार को शामिल किए बिना इस मामले को सुलझाने का कोई तरीका है।

यदि इससे बात न बने, तो यीशु कहता है कि “एक या दो जन को अपने साथ और ले जा” (मत्ती 18:16)। यहाँ पर अधिकांश लोग इसे गलत समझ लेते हैं। वे अपने “दल” को लेकर जाते हैं — जिसमें ऐसे लोग होते हैं, जो उन्हीं का साथ देंगे और कहेंगे कि वे सही हैं। परन्तु बाइबल बताती है कि गवाहों को अपने साथ इसलिए ले जाएँ ताकि, “हर एक बात... निश्चित की जाए।” आप लोगों को अपना पक्ष लेने के लिए नहीं ले जा रहे हैं; आप लोगों को इसलिए ले जा रहे हैं कि वे आप दोनों को सच देखने में सहायता करें।

गवाह ले जाने का अर्थ ऐसे व्यक्ति को साथ लाना है, जो आप दोनों से प्रेम करता हो और आप दोनों से भी अधिक सच से प्रेम करता हो। उनका काम कमरे में “शान्त दिमाग” बनाए रखना है। वे वहाँ उन बातों को सुनने के लिए होते हैं, जहाँ आप गलत हो सकते हैं और जहाँ दूसरा व्यक्ति हठीला हो सकता है। यह इस बात को कहने का एक तरीका है, “हम अपने दम पर इसका समाधान नहीं कर सकते, इसलिए हम ईमानदारी बनाए रखने के लिए किसी बाहरी व्यक्ति की राय ले रहे हैं।” यदि हम सच में इस कदम को अपनाते, तो हमारे नब्बे प्रतिशत झगड़े वहीं समाप्त हो जाते। हमें किसी न्यायाधीश की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, क्योंकि हमारे पास समुदाय की समझदारी होती। समझदारी के ये आरम्भिक दो कदम कलीसिया के बाहर भी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता के साथ काम आ सकते हैं।

तीसरे पक्ष की सामर्थ्य

मत्ती 18:17 में तीसरा कदम मिलता है कि “कलीसिया से कह दे।” हमारे आधुनिक संसार में, हमने इस बात की श्रेणी को पूरी तरह भुला दिया है। हमें लगता है कि कलीसिया व्यापारिक झगड़े सुलझाने के लिए नहीं, बल्कि आराधना और मिलन-समारोहों के लिए है। परन्तु जैसा कि हमने दूसरे भाग में चर्चा की थी, पौलुस को हैरानी हुई थी कि मसीही लोग प्राचीनों की बुद्धि के बजाय किसी सांसारिक न्यायाधीश पर भरोसा करते हैं।

किसी तीसरे पक्ष का उपयोग करना—चाहे वह कोई औपचारिक मध्यस्थ हो, कोई पास्टर हो या कोई समझदार मित्र हो—यह मानने जैसा है कि आपमें कमियाँ हैं। जब आप गुस्से में होते हैं, तो आपकी दृष्टि सीमित हो जाती है। आपको केवल वही दिखता है, जिन तरीकों से आपके साथ गलत हुआ है और जिन तरीकों में सामने वाला व्यक्ति एक राक्षस है, और इससे बाइबल में बताई गई सही और गलत बातों के बीच का अन्तर धुंधला हो जाता है। आप अपना बचाव करने में विशेषज्ञ हो जाते हैं और दूसरे के चरित्र पर प्रश्न उठाने वाले बन जाते हैं।

एक बुद्धिमान तीसरा पक्ष वह देख सकता है, जो आप नहीं देख पाते। वे ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं, जिन्हें पूछने से आप स्वयं डरते हैं। वे बता सकते हैं कि समाधान के मार्ग में आपका घमण्ड कैसे रुकावट बन रहा है। मैं ऐसी बैठकों में शामिल हुआ हूँ, जहाँ एक मध्यस्थ ने बस एक प्रश्न पूछा, जिसने सारा तनाव समाप्त कर दिया, क्योंकि उस प्रश्न ने दोनों पक्षों को दूसरे व्यक्ति के बैक खाते के बजाय अपने हृदयों को देखने पर विवश कर दिया।

किसी तीसरे पक्ष पर भरोसा करने के लिए बहुत अधिक विनम्रता की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ यह मानना है कि शायद आपको पूरी बात पता न हो। इसका अर्थ किसी दूसरे की सलाह मानने के लिए तैयार रहना है, भले ही वे आपको वह सब न दें, जो आप चाहते हैं। परन्तु यही मसीही जीवन का कड़ा

परिश्रम है। यह इस बात को मान लेना है कि मसीह की देह की शान्ति आपकी भूमि की तीन-फुट की पट्टी से कहीं अधिक कीमती है। व्यापारिक समुदाय में तीसरे पक्ष की मध्यस्थता का चलन बढ़ रहा है और भविष्य के अनुबंध वाले समझौतों के लिए इस पर विचार किया जाना चाहिए।

क़ूस का नियम

अन्त में, मत्ती 18 अध्याय का नियम क़ूस के अनुसार जीवन बिताने का एक व्यावहारिक तरीका है। जिस व्यक्ति ने आपको ठेस पहुँचाई है, यह उनसे दूर जाने या उनके विरुद्ध हो जाने के बारे में नहीं, वरन् उनकी ओर बढ़ने की इच्छा रखने के बारे में है। यह निर्णय के बजाय मेल-मिलाप की खोज करने के बारे में है।

जब हम इस मार्ग पर चलते हैं, तो हम संसार को बता रहे होते हैं कि हमारे पास अपनी समस्याओं को सम्भालने का एक अलग तरीका है। हम कह रहे होते हैं कि परमेश्वर से हमें जो अनुग्रह मिला है, वह इतना बड़ा है कि वह किसी कर्ज, टूटे हुए समझौते या आहत अहंकार को भी ढक सकता है। हम संसार को दिखा रहे होते हैं कि शान्ति पाने के लिए हमें किसी हथौड़े की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हमारे पास एक चरवाहा है, जो हमारा मार्गदर्शन करता है।

यह साफ-सुथरा नहीं होगा। ऐसी बातचीत अजीब और भावुक कर देने वाली होती है, और यह अक्सर थका देने वाली भी होती है। इसे वकीलों को ही सम्भालने देना अधिक “साफ-सुथरा” लगता है। परन्तु यह “साफ-सुथरा” तरीका किसी रिश्ते को समाप्त कर देने वाला तरीका है। आमने-सामने बात करने, गवाह रखने, कलीसिया पर भरोसा रखने वाला उलझा हुआ तरीका ही जीवन का तरीका है। यही एकमात्र तरीका है, जिसकी प्रक्रिया में आप अपनी आत्मा को खोए बिना झगड़े को सुलझा सकते हैं। कचहरी जाने का अगला कदम उठाने से पहले, स्वयं से पूछें कि क्या आपने सच में नियम का पालन किया है। क्या आपने उनकी आँखों में देखा है? क्या आपने किसी बुद्धिमान मित्र को यह बताने के लिए बुलाया है कि आप कहाँ गलत हैं? क्या आपने कलीसिया की बुद्धिमानी पर भरोसा किया है? या बड़े समुदाय में, क्या आपने किसी तीसरे पक्ष से मध्यस्थता कराने के बारे में सोचा है? चलिए, यहीं से आरम्भ करते हैं।

4

साँपों के समान बुद्धिमान, कबूतरों के समान भोले

कई वर्षों से बहुतेरे लोगों ने मुझसे कहा है कि उन्हें किसी अनुबंध की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे तो “मसीही भाई” हैं और हाथ मिलाना ही उनका जुड़ाव है। यह सुनने में आत्मिक लगता है न? यह ऐसा सुनाई पड़ता है कि जैसे आप किसी कानूनी प्रतिष्ठान के बजाय पवित्र आत्मा पर भरोसा कर रहे हैं। परन्तु बहुत सी बार ऐसा होता है कि वह “आत्मिक” हाथ मिलाना असल में आलस या अजीब तरह की बातचीत से डरने के कारण से होता है। फिर, छह महीने बाद, जब परियोजना का खर्च बढ़ जाता है और अपेक्षाएँ पूरी नहीं होतीं, तो वही हाथ मिलाना मुझे में बदल जाता है।

यह संसार मुकदमेबाज है, और जब तक प्रभु वापस नहीं आता, तब तक यह बदलने वाला नहीं है। परन्तु एक विश्वासयोग्य भण्डारी होने का अर्थ यह नहीं है कि आप किसी का पायदान बन जाएँ। यीशु ने हमें मत्ती 10:16 में कहा है कि साँपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले ब नो। इसका अर्थ है कि आप संसार में आँखें खोलकर चलें। आप टूटे हुए संसार की सच्चाई को अनदेखा न करें; आप एक विशेष तरह की मजबूत बुद्धि के साथ आगे बढ़ें, जो प्रभु की धन-सम्पत्ति की रक्षा करे और साथ ही आपके हृदय को भी साफ-सुथरा रखे।

भण्डारीपन के जैसे अनुबंध

हमें अनुबंध को भरोसे की कमी की निशानी के तौर पर देखना बन्द करना होगा। असल में, एक स्पष्ट और लिखित समझौता प्रेम का काम होता है। यह अपने पड़ोसी को गलतफहमी से बचाने का और स्वयं को अपनी कमजोर स्मृति से बचाने का एक तरीका है। नीतिवचन 27:23 हमें अपने झुण्डों की दशा अच्छी तरह जानने के लिए कहता है। इस आधुनिक संसार में, आपका “झुण्ड” आपका व्यापार, आपकी सम्पत्ति और आपके समझौते हैं।

हाथ मिलाना अभिवादन के लिए तो अच्छा है, परन्तु एक मुश्किल साझोदारी को सम्भालने के लिए यह बहुत ही खराब तरीका है। जब आप इसे लिख देते हैं, तो आप सीमाएँ तय करते हैं। आप कह रहे होते हैं, “इस बात के लिए मैं जिम्मेदार हूँ, और उस बात के लिए आप जिम्मेदार हैं।” स्पष्ट सीमाएँ उस तरह के टकराव को रोकती हैं, जो कचहरी तक ले जाते हैं। अधिकांश कानूनी विवाद उन अस्पष्ट स्थितियों से आरम्भ होते हैं, जहाँ किसी ने “सोचा” कि कुछ बात पहले से तय थी। सटीक और पेशेवर बनकर, आप असल में दूसरे व्यक्ति का आदर कर रहे होते हैं। आप उन्हें स्पष्टता दे रहे होते हैं। एक अच्छा अनुबंध इस बात को सुनिश्चित करने का एक तरीका है कि यदि व्यापारिक सौदा खराब भी हो जाए, तौभी दोनों पक्ष मिल बने रह सकें। यह विश्वास की कमी नहीं है; यह भण्डारीपन का एक रूप है, जो मानवीय गलतियों की सच्चाई का आदर करता है।

जमानत देने का खतरा

कानूनी मुसीबत में फँसने का सबसे तेज तरीका उस तरह से “अच्छा” बनना है, जिसके बारे में बाइबल विशेष तौर पर चेतावनी देती है। मैं किसी के लिए सह-हस्ताक्षरी बनने या किसी कर्ज के लिए “जमानत” देने की बात कर रहा हूँ। नीतिवचन 6:1-5 इस बारे में बहुत साफ-साफ कहता है। यह बताता है कि यदि आपने किसी दूसरे के लिए स्वयं से वाचा बाँधी है, तो आप अपने ही मुँह की बातों में फँस गए हैं। यह यहाँ तक भी कहता है कि जब तक आप शिकारी के हाथ से हिरण की तरह स्वयं को छुड़ा न लें, तब तक अपनी आँखों में नींद न आने दें।

हम अक्सर सह-हस्ताक्षरी इसलिए बनते हैं, क्योंकि हम सहायता करना चाहते हैं या क्योंकि हमें ना कहने से डर लगता है। परन्तु जब आप जमानत देते हैं, तो असल में आप किसी दूसरे के काम पर प्रभु के संसाधनों का जुआ खेल रहे होते हैं। आप एक ऐसी कानूनी जिम्मेदारी ले रहे होते हैं, जिस पर आपका कोई नियंत्रित नहीं होता। यदि वह व्यक्ति विफल हो जाता है, तो वकील आपके पास ही आता है। मैंने परिवारों को अपना घर और शान्ति इसलिए खोते देखा है, क्योंकि उन्होंने उस तरह से “दयालु” बनने का प्रयास किया, जिसमें पवित्रशास्त्र की समझ को अनदेखा किया गया। सच्चे भण्डारीपन का अर्थ यह जानना है कि कब न कहना है। इसका अर्थ यह समझना है कि आप परमेश्वर के खजाने के प्रबन्धक हैं, और केवल एक असहज दोपहर के भोजन से बचने के लिए उसे जोखिम में डालने का अधिकार आपके पास नहीं है।

जब आप प्रतिवादी हों

कभी-कभी, निष्पक्ष और स्पष्ट रहने का पूरा प्रयास करने के बावजूद, आप पर मुकदमा हो ही जाता है। आप स्वयं को एक ऐसे आक्रमण का शिकार पाते हैं, जो पूरी तरह से अनुचित लगता है। इसकी स्वाभाविक

मानवीय प्रतिक्रिया बचाव की मुद्रा में आने की होती है। आप सम्पत्ति छिपाना चाहते हैं, प्रक्रिया में देरी करना चाहते हैं, और दूसरे पक्ष को परेशान करने के लिए हर तरह की खामी खोजना चाहते हैं।

परन्तु यदि आप एक भण्डारी हैं, तो मुकदमा होने पर आपका चरित्र नहीं बदलता। बचाव पक्ष की मेज पर बैठे होने पर भी आप राजा का ही प्रतिनिधित्व कर रहे होते हैं। इसका अर्थ झूठ नहीं बोलना है। इसका अर्थ है कि ऐसी कोई “रणनीतिक” देरी नहीं करनी है, जो असल में सच से बचने का एक तरीका हो। नीतिवचन 12:22 कहता है कि झूठ बोलने वाले होंठ यहोवा को घृणित लगते हैं, और बयान दर्ज कराने के दौरान भी यह बात सच ही रहती है।

मुकदमे के दौरान प्रभु की सम्पत्ति का प्रबन्धन करने का अर्थ परिणाम से अधिक अपनी ईमानदारी की परवाह करना है। आप वे सभी कागजात देते हैं, जो आपको देने चाहिए। आप सच बोलते हैं, भले ही उससे आपके मुकदमे को नुकसान पहुँचे। आप विरोधी वकील के साथ उसी स्तर पर आदर वाला व्यवहार करते हैं, जैसा शायद उन्हें पूरे सप्ताह न मिला हो। आप इस झगड़े की आग को अपनी आत्मा में घर नहीं करने देते।

प्रतिवादी होना आपके भरोसे की परीक्षा है। यह संसार को यह दिखाने का अवसर है कि आपकी सुरक्षा किसी निर्णय के साथ जुड़ी हुई नहीं है। यदि आप हारते हैं, तौभी प्रभु परमेश्वर ही सिंहासन पर विराजमान रहता है। यदि आप जीतते हैं, तो यह प्रबन्धन का एक और साधन बन जाता है। लक्ष्य मुकदमा “जीतना” नहीं है; बल्कि उस कचहरी से अपनी आत्मा को कड़वाहट से अछूता रखते हुए बाहर निकलना ही लक्ष्य है। आप बुद्धिमान बने रहते हैं, आप पेशेवर बने रहते हैं और आप निर्दोष बने रहते हैं। यही एकमात्र तरीका है, जिससे आप बिना मार्ग भटके आगे बढ़ सकते हैं।

5

संघर्ष के निशान

चाहे आप उस कचहरी से पैसा लेकर निकलें या बिल लेकर निकलें, आप पर कुछ न कुछ बोझ तो रह ही जाएगा। इसमें एक विचार यह है कि जैसे ही न्यायाधीश हथौड़ा पटककर मुकदमा बन्द कर देता है, आप बस एक बटन दबाकर अपने सामान्य जीवन में वापस लौट सकते हैं। परन्तु असल में ऐसा नहीं होता। कानूनी लड़ाई बहुत अधिक तनाव वाली और बहुत अधिक टकराव वाली घटना होती है, जो आपकी आत्मा पर निशान छोड़ जाती है। आपने महीनों, शायद वर्षों, बचाव की मुद्रा में बिताए हैं। आपने दूसरे मनुष्य को एक ऐसे शत्रु के तौर पर देखा है, जिसे हराना है। इस प्रकार की गर्मागर्मी से आप बिना कुछ निशान लिए निकलकर नहीं जा सकते।

आपके विश्वास की असली परीक्षा यह नहीं है कि आप मुकदमे को कैसे सम्भालते हैं; बल्कि यह है कि आप उसके बाद की स्थिति को कैसे सम्भालते हैं। यही तो आप उस “जीत” या “हार” के साथ क्या करते हैं, जब वकील फोन करना बन्द कर देते हैं और मामला पूरी तरह शान्त हो जाता है।

नाराजगी का जहर

यदि आप मुकदमा हार जाते हैं, तो कड़वाहट में डूबने की परीक्षा बहुत जोर से हावी होने लगती है। आपको लगता है कि व्यवस्था ने आपको निराश किया है, दूसरा व्यक्ति हत्या करके भी बच निकला है, और जब आपको लूटा जा रहा था, तब परमेश्वर सो रहा था। आप अपने दिमाग में उस गवाही को बार-बार दोहराते हैं और जो सही उत्तर आपको देना चाहिए था, उसके बारे में सोचते हैं। आप जिससे भी मिलते हैं, उसे बताना चाहते हैं कि सब कुछ कितना गलत था। परन्तु कठोर सच यह है कि: नाराजगी एक जहर है, जिसे आप यह अपेक्षा करते हुए स्वयं पीते हैं कि दूसरा व्यक्ति मर जाए। इससे उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचता; यह केवल आपको ही भीतर से खोखला कर देता है।

यदि आप जीत गए, तो इसका खतरा और भी बारीक होता है। आपको ऐसा गर्व महसूस हो सकता है कि जैसे संसार ने आपकी “सही बात” को मान लिया हो। हो सकता है कि आप इस प्रतीक्षा में हर किसी को सन्देह की दृष्टि से देखें कि अगला व्यक्ति कुछ करने का प्रयास करे, ताकि आप उसे भी चुप करा सकें।

जीत आपको कमजोर बना सकती है। यह आपको यह सोचने पर विवश कर सकती है कि आपकी लड़ने और जीतने की क्षमता में ही आपकी सुरक्षा छिपी है। चाहे आप जीते हों या हारे हों, आपको उस “मुकदमे” को पीछे छोड़ने का तरीका खोजना होगा, इससे पहले कि वह आपकी पहचान बन जाए। आप कोई “वादी” या “प्रतिवादी” नहीं, वरन् राजा की सन्तान हैं। ये सब अस्थायी नाम हैं। किसी अस्थायी झगड़े को अपने स्थायी चरित्र को तय न करने दें।

अन्तिम न्यायाधीश

किसी निर्णय के बाद सबसे आवश्यक बात जो आप कर सकते हैं, वह यह याद रखना है कि संसार की हर अदालत केवल एक परछाई है। न्यायाधीश भी मनुष्य होते हैं; वे थक जाते हैं, ऊब जाते हैं, और कभी-कभी वे गलतियाँ भी करते हैं। सबूत खोजे जाते हैं, और लोग झूठ बोलते हैं। यदि आप इस बिखरे हुए संसार में एकदम सही न्याय की अपेक्षा कर रहे हैं, तो आपको हमेशा निराशा ही मिलेगी।

परन्तु यह जानने से एक शान्ति मिलती है कि परमेश्वर सच को देखता है। उसे यह जानने के लिए कोई बयान दर्ज कराने या प्रश्न-उत्तर करने की आवश्यकता नहीं है कि उस बैठक वाले कमरे में या भूमि की तीन-फुट की उस पट्टी पर क्या हुआ था। वह वहाँ मौजूद था। वह उन मंशाओं को, उन फुसफुसाहटों को और छिपे हुए मुद्दों को जानता है। यदि आपके साथ गलत हुआ और अदालत ने उसे नहीं देखा, तो परमेश्वर ने उसे देखा है। और यदि आपने कुछ गलत किया और उससे बच निकले, तो परमेश्वर ने वह भी देखा है।

अन्तिम न्यायी की ज्योति में जीवन बिताने से आपके जीने का तरीका बदल जाता है। आपको संसार को यह समझाने में अपनी ऊर्जा बर्बाद करने की आवश्यकता नहीं है कि आप पीड़ित थे या नायक थे। आप इस बात से विश्राम पा सकते हैं कि आपके जीवन का अन्तिम निर्णय किसी घरेलू समझौते से जुड़ा नहीं है। यह आपको मिली हुई दया से जुड़ा हुआ है और उस विश्वासयोग्यता से जुड़ा हुआ है, जो आपने मुश्किलों के बीच में दिखाई है। जब आपको यह एहसास होता है कि असल में केवल इस जगत का राजा ही उस हथौड़े को थामे हुए है, तो संसार की अदालत बहुत छोटी दिखने लगती है। आप आगे बढ़ना सहन कर सकते हैं, भले ही यह संसार कभी यह न कहे कि आप सही थे।

और अन्त में, यह कानूनी लड़ाई भण्डारीपन का बस एक और दौर था। यदि आपको पैसों का नुकसान हुआ, तो वह पैसा तो आरम्भ से ही प्रभु का था। यदि आपको आपकी प्रतिष्ठा का नुकसान पहुँचा, तौभी आपका असली नाम स्वर्ग में सुरक्षित है। इस संघर्ष से मिले निशान हार के चिन्ह नहीं हैं; वे याद दिलाते हैं कि आप एक ऐसे संसार में रहते हैं, जिसे सुसमाचार की आवश्यकता है।

कचहरी की आग से अपने हृदय को कठोर न होने दें। नरम बने रहें, उदार बने रहें और लक्ष्य पर ध्यान लगाए रखें। यह सड़क कठिन है और कभी-कभी इस पर चलना बहुत दुःखदायी होता है, परन्तु समाप्ति रेखा आने वाली है। और जब आप प्रभु के सामने खड़े होंगे, तो वह आपसे आपकी जीत-हार का लेखा नहीं माँगेगा। वह आपके हाथों को देखेगा कि क्या वे अभी भी खुले हुए हैं। और आइए यह सुनिश्चित करें कि वे खुले हों।

निष्कर्ष

मैं आपको एक और कहानी सुनाना चाहता हूँ। मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता था, जिसके पास शहर के हर वकील की दृष्टि में एक “पक्की जीत वाला” मुकदमा था। उसके पास अनुबंध और ई-मेल्स थे, और उसका एक व्यापारिक भागीदार था, जिसने वफादार ग्राहकों को चुराने के लिए स्पष्ट रूप से और निर्विवाद रूप से उसकी बदनामी की थी। हम एक ऐसे समझौते की बात कर रहे हैं, जिससे उस व्यक्ति की सेवानिवृत्ति बड़े आराम से गुजरती। वह एक बड़ी जीत के छोर पर खड़ा था, और उसे हासिल करने के लिए उसके पास हर एक कानूनी अधिकार था।

परन्तु मुकदमे से एक सप्ताह पहले, उसने अपने पास्टर के कार्यालय में जाकर कहा कि वह यह मुकदमा वापस ले रहा है। उसने तथ्यों के बारे में अपना मन नहीं बदला था; परन्तु उसे एहसास हुआ कि उस “जीत” की कीमत उसे अपने भाई को खोकर चुकानी पड़ेगी। उसने मुझे बताया कि जब भी वह कानूनी दस्तावेज देखता, तो उसे वह व्यक्ति नहीं दिखता, जिसके साथ उसने पंद्रह वर्ष तक कलीसिया में सेवा की थी, बल्कि उसे एक “प्रतिवादी” दिखने लगता। उसे एहसास हुआ कि यदि वह पैसा जीत भी गया, तो वह उस मनुष्य को खो देगा, और राज्य की अर्थव्यवस्था में, यह एक बुरा सौदा था। वह पक्की जीत छोड़कर चला गया, इसलिए नहीं कि वह कमजोर था, बल्कि इसलिए क्योंकि वह उन तरीकों में धनी था, जिन्हें अदालत समझ नहीं सकती थी। उसने तय किया कि उसे मिलने वाले पैसों से अधिक आवश्यक उसकी शान्ति थी।

यह उस जीवन की कठोर सच्चाई है, जिसके लिए हमें बुलाया गया है। हमने इस पूरी मार्गदर्शिका में अनुबंध, अधिकारों और कचहरी के नियमों के बारे में बात की, परन्तु इनमें से कोई भी बात आपका ठिकाना नहीं है। यदि आप अपना जीवन मानवीय न्याय की सरकती रेत पर बनाने का प्रयास करेंगे, तो आप हमेशा चिन्तित रहेंगे। आप हमेशा एक बुरे निर्णय के कारण से टूट सकते हैं। परन्तु आपकी विरासत—आपकी असली विरासत—किसी स्थानीय बैंक में नहीं रखी है और न ही जिला सम्पत्ति पंजीकरण कार्यालय में दर्ज है। यह नये यरूशलेम में रखी है। और वह एक ऐसा नगर है, जिसकी नींव को कोई वकील हिला नहीं सकता और जिसमें कोई चोर घुस नहीं सकता।

जब आपको एहसास होता है कि आपका भविष्य पूरी तरह से सुरक्षित है, तो आप खुला हाथ रख सकते हैं। आप एक बिखरे हुए और मुकदमों से भरे संसार में बिना टूटे आगे बढ़ सकते हैं। आप वह मनुष्य बन सकते हैं, जो यहाँ इसलिए “धोखा” खाना चुनता है, क्योंकि आप जानते हैं कि आपको वहाँ प्रतिफल मिलेगा। एक भण्डारी के तौर पर सफलता का अर्थ यह समझना है कि समझौता प्रभु के खजाने की एक अस्थायी व्यवस्था है, परन्तु आपकी शान्ति स्वयं प्रभु की ओर से मिला एक अनन्त उपहार है।

आँधी के बीच हृदय के लिए एक प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, सारी पृथ्वी के सर्वोच्च न्यायी, मैं इसे पढ़ने वाले उस स्त्री या पुरुष को तेरे सम्मुख उठाता हूँ, जिसका हृदय अभी जोरों से धड़क रहा है। मैं उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ, जिसे अभी डाक से वह पत्र मिला है, जो कानूनी धमकी का सामना कर रहा है, और जिसे लगता है कि एक अनुचित व्यवस्था उसकी सुरक्षा छीन रही है। हे प्रभु, परिस्थिति बहुत तनावपूर्ण है और डर असली है।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू उन्हें अपनी शान्ति का एक अलौकिक हिस्सा प्रदान कर—ऐसी शान्ति जो जीतने की होड़ में लगे संसार को समझ नहीं आती। उन्हें आज याद दिला कि तू ही उनका रक्षक और पालनहार है। जब यह संसार “अधिकारों” और “न्याय” की बातें जोर-शोर से कर रहा हो, तब तेरी आवाज सबसे ऊँची होकर उन्हें याद दिलाए कि वे तेरी सन्तान हैं। उन्हें साँपों के समान बुद्धिमान बनने का साहस दे, परन्तु कबूतरों के समान भोले बने रहने का अनुग्रह भी दे।

उनकी मुट्टियाँ ढीली करने में उनकी सहायता कर। यदि उन्हें कचहरी जाना पड़े, तो वे अपनी नहीं, बल्कि तेरी प्रतिष्ठा के भण्डारी बनकर जाएँ। यदि उन्हें किसी समझौते पर हस्ताक्षर करने पड़ें, तो वे एक ऐसे हृदय के साथ ऐसा करें, जो कड़वाहट से स्वतंत्र है। शान्ति के राजकुमार की ओर वापस जाने में उनकी अगुवाई कर, जिसने सबसे बड़ा अन्याय सहा, ताकि हमें सबसे बड़ी विरासत मिल सके। उन्हें किसी न्यायाधीश के निर्णय में नहीं, बल्कि क्रूस पर पूरे किए गए काम में अपना विश्राम मिले। आमीन।



डॉ. रिचर्ड जॉन परहार्ड, कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में सन् 2003 से बाइबल और थियोलॉजी के प्रोफेसर (आचार्य) रहते हुए, वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और एकेडमिक डीन (शैक्षणिक अध्यक्ष) के तौर पर काम करते हैं। उन्होंने बैपटिस्ट बाइबल सेमिनरी से सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. (मैग्रा कम लॉड) और डालस थियोलॉजिकल सेमिनरी से बाइबल की व्याख्या में मास्टर्स इन थियोलॉजी की डिग्री हासिल की है। वे “एंटीओसीन थियोरिया इन द राइटिंग्स ऑफ थियोडोर ऑफ मोपसुएस्तिया एण्ड थियोडोरेट ऑफ सायरस” (Antiochene Theōria in the Writings of Theodore of Mopsuestia and Theodoret of Cyrus) (फोर्ट्रेस प्रेस, 2015) पुस्तक के लेखक भी हैं।

डॉ. लैरी ओट्स, मारनाथा बैपटिस्ट सेमिनरी में लम्बे समय से बाइबल के प्रोफेसर (आचार्य) और पूर्व में सन् 2009-2019 तक अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने वाटरटाउन, विस्कॉन्सिन में मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की है। मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी से ही स्नातक होने के बाद, उन्होंने सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. की है और वे मौलिकतावाद और बैपटिस्ट इतिहास के विशेषज्ञ हैं।

